INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 6, June 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

समाज के सतत विकास में संगीत की भूमिका

प्रो. मधुबाला शर्मा एवं सुकन्या तिवारी
संगीत विभाग, एन. एम .एस.एन. दास कॉलेज बदायूँ,रूहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली,243006.

शोध सार - **"समाज के सतत विकास में संगीत की भूमिका"** विषय पर आधारित यह शोध संगीत की बहुआयामी भूमिका का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। संगीत मानव जीवन के विभिन्न आयामों—सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं व्यक्तित्व —को प्रभावित करने वाला एक प्रभावी माध्यम है, जो सतत विकास की अवधारणा को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होता है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह परंपराओं, लोक कलाओं एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन का प्रमुख साधन है। व्यक्तिगत स्तर पर संगीत मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हुए तनाव, चिंता एवं अवसाद को कम करने में सहायक है तथा भावनात्मक संतुलन स्थापित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र से परिलक्षित होता है कि संगीत सामाजिक समावेशन, एकता और सह-अस्तित्व की भावना को प्रोत्साहित करता है, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभावित है। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में संगीत विद्यार्थियों की रचनात्मकता, एकाग्रता और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करता है, जिससे उनकी सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है। साथ ही, संगीत आध्यात्मिक उन्नति एवं आंतरिक शांति का भी माध्यम है, जो व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व के विकास में योगदान देता है। अतः संगीत सतत विकास के विभिन्न आयामों को एकीकृत करने वाला एक सशक्त माध्यम है, जो मानव जीवन की गुणवत्ता को उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द - संगीत, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण, व्यक्तिगत कल्याण, शिक्षा, सतत विकास।

"नादब्रह्म की अवधारणा [1] के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि ध्वनि (नाद) से उत्पन्न मानी जाती है। इसी विचार को स्पष्ट करने हेतु निम्न नव-रचित श्लोक प्रस्तुत है—

"नादब्रह्मस्वरूपेण, जगदेतत् प्रवर्तते।

संगीतं तस्य साधनं, मोक्षमार्गस्य सूचकम्॥"

अर्थात, संसार नाद-ब्रह्म के स्वरूप से संचालित होता है। संगीत उसी का साधन है और मोक्ष का मार्ग दिखाता है। संगीत में स्वर, लय और ताल का समन्वय होता है। यह ध्वनि का ऐसा मधुर और व्यवस्थित रूप है, जो मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित करता है। संगीत मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही उसके साथ जुड़ा हुआ है। यह केवल कला नहीं, अपितु अन्तः करण की भाषा है जो भावनाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनती है। भारतीय संस्कृति में संगीत को अत्यंत ऊँचा स्थान प्राप्त है, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया, बिस्मिल्लाह खान को **तालार मौसिकी** पुरस्कार वर्ष 1992 में ईरान गणराज्य द्वारा दिया गया , वर्ष 2001 भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, **भारत रत्न** से सम्मानित किया गया,तो रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 2000 से अधिक गीतों (रवीन्द्र संगीत) की रचना की, वर्ष1913 ई. में रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनकी काव्यरचना गीतांजलि के लिये साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। वहीं, पंडित कंठे महाराज ने तबला वादन में तकनीकी और शास्त्रीयता को नई

ऊँचाइयों पर पहुँचाया लगभग 70 वर्ष तक इन्होंने सभी विख्यात गायकों एवं नर्तकों को अपने तबले पर संगति दी। 1954 में इन्होंने ढाई घंटे लगातार तबला बजाने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया और इसे आध्यात्मिक साधना से भी जोड़ा । कहा जाता है कि जहाँ शब्द समाप्त हो जाते हैं, वहाँ संगीत प्रारंभ होता है। वर्तमान समय में, जब समाज अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है, संगीत एक ऐसा माध्यम बनकर उभरता है जो मानसिक शांति, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखता है।

चित्र स.1

भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, भारत रत्न से सम्मानित

सतत विकास का तात्पर्य ऐसे विकास से है जो वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को प्रभावित न करे। यह समाज में संतुलन, शांति, और समृद्धि स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि संगीत को शिक्षा, समाज और नीतियों में उचित स्थान दिया जाए, तो यह सतत और समावेशी विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हो सकता है। इस संदर्भ में संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह व्यक्ति और समाज दोनों के संतुलित विकास में सहायक है।

चित्र स.2 संगीत और सतत विकास

उद्देश्य -

- समाज में संगीत के प्रभावों का अध्ययन करना ।
- सांस्कृतिक संरक्षण में संगीत की भूमिका को समझना।
- व्यक्तिगत मानसिक एवं भावनात्मक विकास में संगीत के योगदान का विश्लेषण करना।
- शिक्षा में संगीत के महत्व का अध्ययन करना।
- सतत विकास में संगीत की भूमिका को स्पष्ट करना।

मुख्य बिंदुः-

- **सामाजिक एकता:** सामूहिक गायन और वादन से सामूहिकता की भावना विकसित होती है।
- **संवाद का माध्यम:** संगीत भाषा की सीमाओं को पार कर लोगों को जोड़ता है।
- **सामाजिक परिवर्तन:** लोकगीत एवं जनगीत सामाजिक जागरूकता फैलाने में सहायक होते हैं।

उदाहरण के रूप में, भक्ति आंदोलन में संगीत ने समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया।

संगीत और सामाजिक विकास

सामाजिक विकास का अर्थ है—समाज में समानता, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक समृद्धि का विकास। संगीत समाज में एकता, सहयोग और सामंजस्य स्थापित करता है।संगीत प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम है, जो भाषा और सीमाओं से परे जाकर लोगों को जोड़ता है।

वर्तमान समय में जब समाज विभिन्न प्रकार की समस्याओं—जैसे तनाव, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक असंतुलन—का सामना कर रहा है, तब संगीत एक सकारात्मक परिवर्तन का साधन बनकर उभरता है। **तानसेन** द्वारा रचित (सादरा) ध्रुवपद अंग, जिसे भातखंडे जी ने राग भैरव में लिपिबद्ध किया है। इस प्रकार है-

"विष्णु चरण, जल, ब्रह्म कमण्डल।

शिव जटा राजत देवी गंगे।।

भागिरथी सकल जगतारिणी भूमिभार उतारिनी।

मन-धन-बेलि कटाच्छन के तारन तरंगे।।"[3]

तानसेन के इस ध्रुवपद के आरंभ में गंगा की उत्पत्ति के विषय में बताया गया है। अतः कहा जा सकता है कि किस प्रकार सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप संगीत के गीतों में भी परिवर्तन होता गया। ध्रुवपद युग के बाद ख्याल गायन का प्रारंभ हुआ। गायन के ढंग अथवा शैली में दृष्टव्य परिवर्तन भी सामाजिक सामाजिक ढाँचे परिवर्तन का परिणाम था।

आधुनिक संदर्भ में संगीत और समाज-

- डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से वैश्विक जुड़ाव।
- सोशल मीडिया पर संगीत द्वारा सामाजिक संदेशों का प्रसार।
- ऑनलाइन संगीत शिक्षा और नए अवसर।

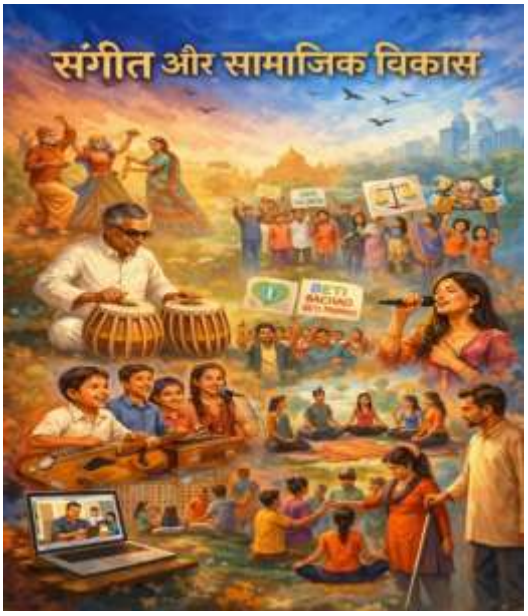

चित्र स.3संगीत और सामाजिक विकास

डॉ० अमलदास शर्मा इस के संबंध में विचार करते हुये कहते हैं-"हमारे देश में साधारण लोक शिक्षा से लेकर उच्चतम ज्ञान की वाणी संगीत के माध्यम से ही प्रचारित होती आयी है। इस देश के किसान, मजदूर, मांझी सभी संगीत की स्वर लहरों में गोते खाते रहते हैं। अतः भारतीय समाज का संपूर्ण जीवन ही संगीतमय है।"[4]

संगीत और सांस्कृतिक संरक्षण

संगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख अंग है।

मुख्य बिंदुः-

- **परंपराओं का संरक्षण:** शास्त्रीय एवं लोक संगीत परंपराओं को जीवित रखता है।
- **संस्कृति का प्रसार:** विभिन्न संस्कृतियों का आदान-प्रदान संगीत के माध्यम से होता है।
- **पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान हस्तांतरण:** गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से संगीत का ज्ञान सुरक्षित रहता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत, जैसे ध्रुपद और ठुमरी, सांस्कृतिक धरोहर के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।अफ्रीका में, संगीत ने सामाजिक विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें पारंपरिक ढोल-नगाड़े और नृत्य कई व्यापक आंदोलनों का अभिन्न अंग रहे हैं। लैटिन अमेरिका में, साल्सा और सांबा जैसी संगीत शैलियाँ सामाजिक चरित्र का अभिन्न अंग बन गई हैं, जो इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करती हैं। **संगीत नाटक अकादमी** एक स्वायत्त निकाय है जो भारत की समृद्ध

प्रदर्शन कलाओं जैसे शास्त्रीय नृत्य, संगीत, रंगमंच, कठपुतली, शिल्प और लोक कलाओं की पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के कार्य में लगी हुई है और इसकी सामान्य परिषद में भारत की शीर्ष सांस्कृतिक और कलात्मक हस्तियों का प्रतिनिधित्व है।

चित्र स.4 संगीत नाटक अकादमी

संगीत के माध्यम से व्यक्तिगत विकास

संगीत का प्रभाव व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

मुख्य बिंदु:

- **मानसिक शांति:** संगीत तनाव और चिंता को कम करता है।
- **भावनात्मक संतुलन:** यह व्यक्ति को अपनी भावनाओं को समझने और व्यक्त करने में सहायता करता है।

चिकित्सीय उपयोग -

- अवसाद नियंत्रण में लाभकारी
- नींद की समस्या के समाधान में सहायक
- ध्यान और योग के साथ समन्वय

संगीत और योग का संयुक्त प्रयोग मानसिक स्वास्थ्य सुधार में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। **विश्व स्वास्थ्य संगठन कल्याण** को दैनिक जीवन के लिए एक संसाधन के रूप में मान्यता देता है और इस बात पर प्रकाश डालता है कि स्वास्थ्य समानता को समझने और संबोधित करने के लिए कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना कितना महत्वपूर्ण है।[5]

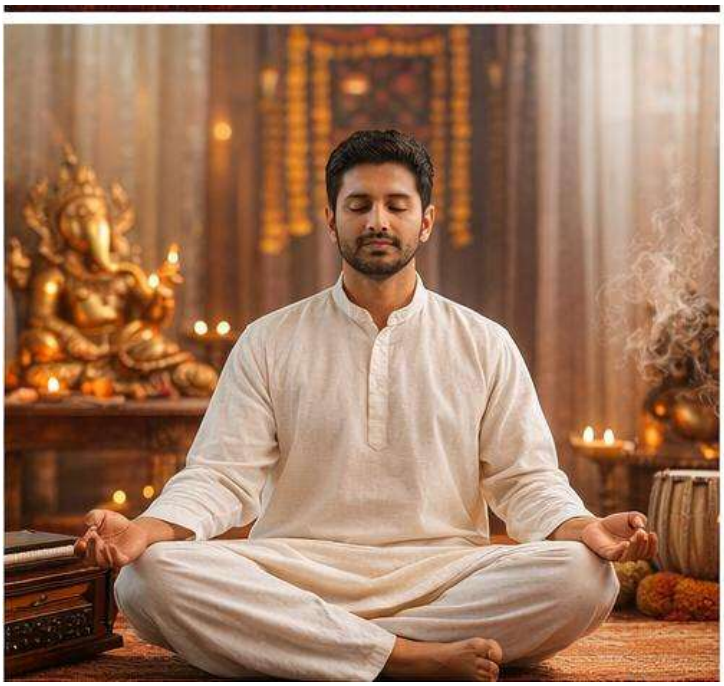

चित्र स.4 संगीत के माध्यम से व्यक्तिगत विकास

संगीत से शिक्षा में सतत विकास

संगीत से शिक्षा में सतत विकास संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक कौशल को बढ़ाकर एक समावेशी और समृद्ध शैक्षिक वातावरण बनाता है जो छात्रों में आत्मविश्वास, एकाग्रता, सांस्कृतिक जागरूकता और आलोचनात्मक सोच विकसित करता है।

❖ शैक्षिक विकास में भूमिका

- सीखने की क्षमता को बढ़ाता है।
- स्मरण शक्ति और एकाग्रता में सुधार करता है।
- रचनात्मकता के गुण विकसित करता है।

❖ समावेशी शिक्षा

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयोगी।
- भाषा और संज्ञानात्मक विकास में सहायक।

❖ नैतिक एवं मूल्य शिक्षा

- संगीत के माध्यम से नैतिक मूल्यों का विकास होता है।
- अनुशासन, धैर्य और समर्पण जैसे गुण विकसित होते हैं।

भारत सरकार संगीत शिक्षा और इसके संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाती है। **संस्कृति मंत्रालय (MoC) द्वारा** वरिष्ठ और युवा कलाकारों को फेलोशिप (₹80,000/माह तक) और छात्रवृत्ति (₹50,000/माह तक) दी जाती है, ताकि पारंपरिक संगीत में शोध और प्रशिक्षण को बढ़ावा मिल सके। **आईसीसीआर (ICCR) द्वारा** 'लता मंगेशकर नृत्य एवं संगीत छात्रवृत्ति योजना' के माध्यम से भारतीय और विदेशी छात्रों को भारतीय विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है। **आकाशवाणी (AIR)** द्वारा आयोजित आकाशवाणी संगीत सम्मेलन (1955 से) हिंदुस्तान और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के प्रतिष्ठित और युवा कलाकारों को मंच प्रदान करता है।

चित्र स.5 संगीत से शिक्षा में सतत विकास

सामाजिक परिवर्तन के लिए संगीत (दक्षिण अफ्रीका)यह कार्यक्रम संगीत शिक्षा के माध्यम से बेरोजगारी, हिंसा और असमानता सहित सामाजिक चिंताओं का समाधान करता है। यह युवाओं को व्यक्तिगत रूप से विकसित होने, आत्मविश्वास हासिल करने और एक-दूसरे के साथ संबंध बनाने का अवसर देता है।[6] नीति निर्माताओं की यह जिम्मेदारी है कि वे समावेशी और न्यायसंगत नीतियां बनाएं जो संगीत शिक्षा को व्यापक शैक्षिक परिदृश्य में एकीकृत करें। इन नीतियों में संगीत शिक्षा के महत्व पर जोर दिया जाना चाहिए और इनमें पाठ्यक्रम विकास, संसाधन आवंटन और शिक्षक प्रशिक्षण के लिए दिशानिर्देश शामिल होने चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए भी काम करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे को, चाहे उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो, संगीत शिक्षा के अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त हो।[7]

सतत विकास लक्ष्य (SDGs) में योगदान –

संगीत निम्नलिखित लक्ष्यों में योगदान देता है:

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ।
- अच्छा स्वास्थ्य एवं कल्याण ।
- सामाजिक समानता ।

सतत विकास के लक्ष्यों (SDGs) से संगीत का संबंध

United Nations द्वारा निर्धारित 17 SDGs के संदर्भ में संगीत की भूमिका:

- SDG 3 (Good Health & Well-being): म्यूजिक थेरेपी से मानसिक स्वास्थ्य सुधार ।
- SDG 4 (Quality Education): संगीत आधारित शिक्षा से रचनात्मकता व सीखने की क्षमता बढ़ती है ।
- SDG 11 (Sustainable Cities & Communities): लोक संगीत और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण ।

संगीत: सतत विकास का बहुआयामी माध्यम (चार्ट/टेबल)

क्रमांक	आयाम	संगीत की भूमिका	प्रभाव	उदाहरण
1	**सामाजिक**	समाज में एकता, सहयोग और सामंजस्य स्थापित करता है	सामाजिक समावेशन, भाईचारा, सांस्कृतिक एकता	समूह गान, भजन, राष्ट्रीय गीत
2	**सांस्कृतिक**	परंपराओं और विरासत को संरक्षित एवं प्रसारित करता है	सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है	लोकगीत, शास्त्रीय संगीत, त्योहारों में संगीत
3	**व्यक्तिगत कल्याण**	मानसिक शांति, तनाव मुक्ति और भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है	मानसिक स्वास्थ्य सुधार, सकारात्मक सोच	संगीत चिकित्सा, ध्यान संगीत
4	**शैक्षिक**	सीखने की क्षमता, रचनात्मकता और अनुशासन को बढ़ाता है	संज्ञानात्मक विकास, एकाग्रता में वृद्धि	संगीत शिक्षा, स्कूल पाठ्यक्रम

5	**आध्यात्मिक**	आत्मा को शांति और ईश्वर से जुड़ाव का माध्यम बनता है	आंतरिक शांति, आत्मिक विकास	भजन, कीर्तन, मंत्र
6	**आर्थिक**	रोजगार और उद्योग का माध्यम	कलाकारों के लिए आय, संगीत उद्योग का विकास	गायक, वादक, संगीत शिक्षक

निष्कर्ष - समाज के सतत विकास के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि संगीत केवल एक कला नहीं, अपितु एक बहुआयामी सामाजिक शक्ति है, जो मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित और समृद्ध बनाती है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसिक और शैक्षिक विकास के बीच एक सेतु का कार्य करता है। संगीत समाज में एकता, समरसता और सह-अस्तित्व की भावना को प्रबल करता है। यह जाति, धर्म, भाषा और वर्ग के भेदभाव को कम कर सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देता है। साथ ही, पारंपरिक संगीत शैलियों और लोक संस्कृति के संरक्षण के माध्यम से यह सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखता है, जो सतत विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है।

आधुनिक युग में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और तकनीक के माध्यम से संगीत ने वैश्विक स्तर पर जुड़ाव स्थापित किया है। इससे न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और शिक्षा के नए मार्ग भी खुले हैं। संगीत के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और सामाजिकऽ न्याय जैसे विषयों पर प्रभावी संदेश प्रसारित किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, संगीत मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने, तनाव को कम करने और व्यक्ति के समग्र विकास में भी सहायक है, जो एक स्वस्थ और उत्पादक समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है।

अतः कहा जा सकता है कि—

"संगीत समाज के सतत, समावेशी और संतुलित विकास का एक सशक्त माध्यम है, जो वर्तमान और भविष्य के बीच सामंजस्य स्थापित कर एक बेहतर समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"

सुझाव-

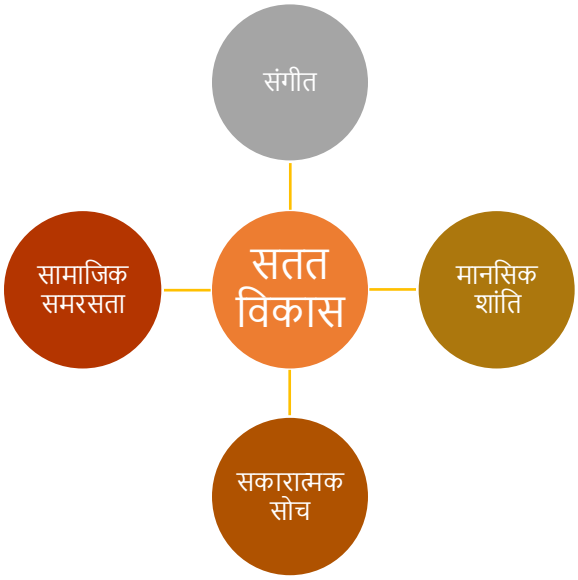

- शिक्षा प्रणाली में संगीत को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया जाए।
- संगीत चिकित्सा को अस्पतालों में बढ़ावा दिया जाए।
- लोक संगीत और परंपराओं के संरक्षण हेतु सरकारी पहल बढ़ाई जाए।
- शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Rabindranath Tagore – संगीत और संस्कृति।
2. Hazrat Inayat Khan – ध्वनि और संगीत का रहस्यवाद।
3. पं० विष्णु नारायण भातखण्ड, क्रमिक पुस्तक मालिका, दूसरी पुस्तक, संगीत कार्यालय, हाथरस, द्वितीय आवृति, पृ०-211
4. डॉ० अमलदास शर्मा, MUSICIANS OF INDIA, Post and Present, Pilgrims Publishing, 1", edition Page No-32
5. डब्ल्यूएचओ। स्वास्थ्य संवर्धन शब्दावली 2021। जिनेवाः विश्व स्वास्थ्य संगठन; 2021। यहां से उपलब्धः https://www.who.int/activities/promoting-well-being [गूगल स्कॉलर])
6. सामाजिक परिवर्तन के लिए संगीत। "कार्यक्रम और पहल।" सामाजिक परिवर्तन के लिए संगीत, दक्षिण अफ्रीका ,
7. होल्डन, हिलेरी, और रॉबर्ट बटन। "नौ एशियाई देशों में संगीत शिक्षण: संगीत शिक्षा नीति और अभ्यास के दृष्टिकोणों की तुलना।" ब्रिटिश जर्नल ऑफ म्यूजिक एजुकेशन , खंड 24, अंक 2, 2007, पृष्ठ 169-189।
8. संगीत और पर्यावरण जागरूकता पर आधारित संगोष्ठी एवं सम्मेलन शोध-पत्र।
9. योग, ध्यान और संगीत के एकीकृत अध्ययन से संबंधित शोध सामग्री।

10. American Music Therapy Association. (2019). Journal of Music Therapy, 56(2), 120–135.

11. International Society for Music Education. (2020). International Journal of Music Education, 38(4), 567–580.

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.